द्वि-दिवसीय राज्यस्तरीय संगोष्ठी

इक्कीसवीं सदी का उपन्यास साहित्य

मुख्य संपादक

प्रधानाचार्य डॉ. आर. एस. मोरे

संपादक

प्रा. कैलास माने

विभाग प्रमुख, हिंदी विभाग

सहसंपादक

डॉ. डी. एस. आनारसे

ISBN 978-93-5137-725-2

कर्मवीर

रयत शिक्षण संस्था का

श्री. रावसाहेब रामराव पाटील महाविद्यालय, सावळज

ता. तासगांव, जि. सांगली (महाराष्ट्र)

ज्ञान-विज्ञानं विमुक्तये

संयुक्त तत्वावधान

युनिव्हर्सिटी ग्रँट कमिशन,

नवी दिल्ली

अनुक्रम

१	हिंदी महिला उपन्यास साहित्य : स्थिति एवं गति	प्रा. डॉ. शहनाज महेमुदशा सय्यद	६
२	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में संघर्षशील नारी का चित्रण	प्रा. जे.ए.पाटील	९
३	'२१ वी सदी के प्रथम दशक का हिंदी साहित्य'	डॉ.बी.डी.सगरे	११
४	इक्कीसवीं सदी का उपन्यास साहित्य-नारी विमर्श	प्रा. ओमप्रकाश मौर्य,	१६
५	इक्कीसवीं शती के हिंदी उपन्यासों में -नारी विमर्श	प्रा. कोळेकर संतोष वसंत,	१८
६	इक्कीसवीं सदी का उपन्यास साहित्य -नारी विमर्श	प्रा. डॉ.दत्तात्रय सदाशिव अनारसे	१९
७	इक्कीसवीं सदी का उपन्यास साहित्य -दलित विमर्श	प्रा.डॉ.एम.ए.येह्लूरे,	२१
८	मिथिलेश्वर के उपन्यासः ग्राम जीवन के सांस्कृतिक पहलू	डॉ.रविंद्र पाटील	२३
९	नारी विमर्श की अभिव्यक्तिः 'माटी कहे कुम्हार से'	डॉ.श्रीकांत पाटील	२६
१०	इक्कीसवी सदी का उपन्यास साहित्य : नारी विमर्श	प्रा.डॉ.काकासो बी. भोसले	२८
११	इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में नारी-विमर्श !	प्रा. मनोजकुमार वामन वायदंडे	२९
१२	नमिता सिंह के अपनी सलीबें उपन्यास में दलित-विमर्श	प्रा.डॉ.विठ्ठल नाईक	३२
१३	२१ वी सदी का उपन्यास साहित्य-नारी विमर्श	प्रा.डॉ.रमेश गोवंडे, प्रा.डॉ.गजानन चव्हाण	३४
१४	इक्कीसवी सदी के हिंदी उपन्यास साहित्य में-नारी विमर्श	प्रा.डॉ.सूर्यवंशी रंजना कृष्णा	३६
१५	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	डॉ.रीना सुरेश पाटील	३८
१६	'अंधेरे का ताला' उपन्यास में चित्रित स्त्री विमर्श	डॉ.सुनील बापू बनसोडे	४०
१७	इक्कीसवीं सदी के उपन्यास में चित्रित 'महानगरीय नारी'	प्रा. प्रियांका कैलास माने	४२
१८	इक्कीसवीं सदी का उपन्यास साहित्य और नारी विमर्श	प्रा. माने के.बी.	४५
२०	प्रथम दशक का आँचलिक उपन्यास-पुरवा	प्रा. डॉ.सौ.अपर्णा कुचेकर	४८
२१	२१ वीं सदी का उपन्यास साहित्य-दलित विमर्श	डॉ. आर.पी.भोसले	५०
२२	'आज बाजार बंद है' उपन्यास में चित्रित दलित चेतना	प्रा.तांबोळी एस.बी.	५२
२३	इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में महानगरीयबोध	प्रा. बहिरम देवेंद्र मगनभाई	५४

इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में महानगरीयबोध

प्रा. बहिरम देवेंद्र मगनभाई
एम.जे. एस. कॉलेज, श्रीगोंदा, ता.श्रीगोंदा, जि. अहमदनगर, भ्रमणध्वनी :- ९५४५१०४९५७
Email:-bahiram241@gmail.com

मीडिया की विस्मयकारी प्रगति का स्फोटक दौर इक्कीसवीं सदी का पहला चरण है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया को जोड़नेवाला यही एक माध्यम है। इसका प्रमुख परिवेश महानगरीय है। इसलिए इस प्रक्रिया में महानगरीय बोध और इक्कीसवीं सदी के उपन्यास साहित्य का चिंतन करना आवश्यक हो जाता है। वर्तमान सदी महानगर को विश्व में परिवर्तित करती है तथा विश्व को महानगर में। विश्व ग्राम की इस स्पर्धा ने साहित्यकारों के सम्मुख चिंतन और चिंता के अनेक प्रश्न उपस्थित किए है। इसलिए इक्कीसवीं सदी की विशेषताओं को समझाना जरुरी है। यह सदी ज्ञान-विज्ञान से अधिक तकनीक की सदी है। मीडिया एक ऐसा भ्रमित माध्यमहै जो आधुनिक भारतीय समाज की उत्तर- आधुनिक तस्वीर को निर्माण कर रहा है। डॉ.बी.आर.धापसे इस संदर्भ में कहते है"सद्य स्थिति में भारतीय जन- मानस को जिस घटना ने सबसे अधिक प्रभावित किया है, वह है भूमंडलीकरण अर्थात वैश्वीकरण। और भूमंडलीकरण से उपजे उपभोक्तावाद बाजारवाद एवं दूरसंचार ने।"[१] हिंदी उपन्यास साहित्य में आधुनिक बोध का एक अंग महानगरीय बोध था। जिस में अजनबीपन, अकेलापन, कुंठा जैसी वैयक्तिक मानसिक पीड़ाओं का ताना बाना बुना होता था। इसी के साथ सामाजिक चेतना, सांप्रदायिक झगड़े, विभाजन त्रासदी, राजनैतिक चेतना आदि को आधार बनाकर संवेदनशील अस्मितावादी उपन्यास साहित्य लिखा गया।

'महानगरीय बोध' को केंद्र में रखकर बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में निर्मल वर्मा, संजीव, कमलेश्वर भटनागर, सुरेंद्र वर्मा, मोहनदास नैमिशराय, काशिनाथ सिंह, गोविंद मिश्र, मनोहर श्याम जोशी आदि उल्लेखनीय है। महानगरीय बोध के संदर्भ में चिंतन के विविध आयाम प्रस्तुत करने में महिला उपन्यासकारो की होड़ मची है। स्वातंत्र्योत्तर महिला उपन्यासकारों में उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, अलका सरावगी, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, पद्मा सचदेव, ममता कालिया, सूर्यबाला, जयश्री रॉय, गीतांजलीश्री, मधु कांकरिया, मैत्रेयी पुष्पा आदि नाम उल्लेखनीय है। महानगरीय परिवेश में स्त्री चिंतन का सफर उसकी स्वतंत्रता के साथ शुरू होकर स्वैराचार तक जारी रहा है। इसका बेबाक चित्रण इक्कीसवीं सदी की महिला उपन्यासकारों ने किया है। बाजारवादी दौर में नारी को भोग की वस्तु माना गया, इसका प्रमुख कारण रहा है अर्थ केंद्रित मानसिकता। महानगरों में पब पर्व, कॉल गर्ल की समस्या, मॉडलिंग में होनेवाला नारी शोषण, कार्पोरेट जगत में स्त्री का शोषण आदि समस्याओं को लेकर ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा जैसी लेखिकाओं ने दौड़, अंधेरे का ताला, विजन, गुनाह बेगुनाह जैसे उपन्यास लिखे है।

इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में स्त्री विमर्श, दलित-विमर्श, उत्तर-आधुनिक विमर्श हिंदी उपन्यास साहित्य पर हावी रहा है। महानगरीय बोध के परिणाम स्वरुप वृध्द विमर्श, लिव ॲण्ड रिलेशनशिप की समस्या, पर्यावरण विमर्श, समलैंगिक संबंधों के साथ शिक्षा व्यवस्था में पनपता भ्रष्टाचार, कार्यालयों में होनेवाला शोषण, राजनैतिक भ्रष्टाचार, न्यायव्यवस्था, संरक्षण व्यवस्था में होनेवाला भ्रष्टाचार भी प्रमुख विषय रहे है। सभ्य कही जानेवाली इस नागर संस्कृति के असभ्य बर्बर पक्षों पर ही इक्कीसवीं सदी के उपन्यासकारों ने अधिक प्रकाश डाला है। इसी सदीं के प्रमुख चर्चित उपन्यासकारों में काशिनाथ सिंह प्रमुख हस्ताक्षर है। इनके 'काशी का अस्सी'(२००२) और 'रेहन पर रग्घू' (२००४) उल्लेखनीय उपन्यास है। जिनके बारे में रमाकांत श्रीवास्तव कहते है, "काशी का अस्सी में भारतीय नगरों की खण्डित होती अस्मिता का दर्द और बाजारवादी प्रवृत्तिओं के उभार की सुस्पष्ट पदचाप है। 'रहन पर रग्घू' कठोर यथार्थवाद से टकराकर मध्यम वर्ग के सपनों के बिखरने की कथा जिसके लिए बाजारवाद की आक्रमकता के अतिरिक्त स्वयं कथा नायक की कमजोरियां भी उत्तरदायी है।"[२] वर्तमान समय में महानगरीय संस्कृति में पाश्चात्य और भारतीयता का मिश्रण हुआ है, यह महानगरीय बोध वैश्विक बाजारवाद, सूचना प्रोद्योगिकी, मीडिया विमर्श, पूँजावादी समाज व्यवस्था से प्रभावित है।

सन २००५ में प्रकाशित ममता कालियाजी का 'दौड़' उपन्यास प्रकाशित हुआ जो महानगरीय संस्कृति की अति नग्नता को प्रस्तुत करता है। महानगरीय परिवेश में 'स्पर्धा' जीवन का अंग बन गई है। यह यथार्थ होने के बावजूद भी यह जरुरी है कि, कोई स्पर्धा नैतिक मूल्यों को रौंधकर जीती जाए